Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / January 2025 / Special Issue 15 Volume V

अनुक्रम

अक्र	शोधालेख का नाम	प्रतिभागी का नाम	पृ.क्र.
1	भारतीय लोकशाहीचा प्रवास : एक चिंतन	प्राचार्य डॉ. आर. के. शानेदिवाण	11
2	भारतीय जनतंत्र और समकालीन परिवेशः सत्यस्थिति	प्रो. (डॉ.) विजयकुमार वि.पाटील	17
3	भारतीय जनतन्त्र और स्वातन्त्र्योत्तर साहित्यिक आन्दोलन	प्रा. डॉ. डिल्लीराम शर्मा संग्रौला	22
4	भारतीय जनतन्त्र और समकालीन परिवेश : असम के सन्दर्भ में	प्रा.डॉ. नंदिता राजबंशी	26
5	भारतीय जनतंत्र : विविधता में एकता	डॉ.सपना दलवी	27
6	जनवादी कविता की प्रासंगिकता	प्रो.डॉ.सरोज पाटील	29
7	जनतंत्र और समकालीन हिंदी कविता	प्रो. डॉ. सहदेव वर्षाराणी निवृत्तीराव	34
8	लोकतंत्र और अधिकार: भारत की अनोखी पहचान	प्रा.डॉ. प्रविणविलासचौगले	37
9	लोकतंत्र को मजबूत बनाती प्रतिरोध की भावना	प्रा. डॉ. आरिफ महात	41
10	संवैधानिक मूल्यों को आश्वस्त करती साठोत्तरी हिंदी कविता:कवि धूमिल के विशेष संदर्भ में	प्रो.डॉ.प्रकाश विष्णु कांबले	45
11	भारतीय जनतंत्र -: भाषा अनेक भाव एक	प्रा. आविनाश वसंतराव पाटील	49
12	ग्रामीण चुनाव और जनतंत्र का तमाशा: 'मदारी पुर जंक्शन'	श्री .संतोष शंकर साळुंखे	50
13	भारतीय जनतंत्र और हिंदी कविता	प्रो. डॉ. सुपर्णा संसुद्धी	54
14	आधुनिक हिंदी साक्षात्कारों में राजनीतिक यथार्थ	प्रो.डॉ.सविता कृष्णात पाटील	56
15	भारतीय जनतंत्र और कुसुम कुमार के नाटक	प्रा.डॉ.वसुंधरा उदयसिंह जाधव	59
16	धूमिल की कविता में जनतंत्र	प्रा. डॉ .वंदना प्रकाश पाटील	62
17	जन कवि धूमिल की कविताओं में जनतांत्रिक व्यवस्था का मूल्यांकन	प्रा.डॉ.माधव राजप्पा मुंडकर	65
18	भारतीय जनतंत्र और जनवादी कवि सुदामा पाण्डेय'धूमिल' का काव्य	प्रा. अजीत दादू फाळके	68
19	भारतीय जनतंत्र और कवि धूमिल	प्रा. डॉ. नितीन विठ्ठल पाटील	70
20	समकालीन जनतंत्र और राजनीति शोध आलेख	प्रा. डॉ .सुषमा मारुती चौगले	73
21	भारत का खेल पुनर्जागरण :बुनियादी ढांचे के विकास की यात्रा	प्रा.डॉ. प्रशांत बिभीषण पाटील	77
22	रघुवीर सहाय की कविता में लोकतंत्र की अभिव्यक्ति	प्रा. नीलकंठ सदाशिव पाटील	79
23	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था और चुनाव	प्रा. डॉ. दस्तगीर बालेखान पठाण	81
24	भारतीय जनतंत्र और चुनाव प्रक्रिया 'सातफेरे'उपन्यास के विशेष संदर्भ में	प्रा. डॉ. सारिका राजाराम कांबले	83
25	भारतीय जनतंत्र : चुनाव प्रक्रिया औ रसोशल मीडिया	श्री. अनिल विठ्ठल मकर	86
26	अनियंत्रित चुनाव प्रक्रिया के परिप्रेक्ष्य में 'लोकतंत्र का कचरा' कहानी	प्रा. डॉ. अक्षय राजेन्द्र भोसले	89
27	भारतीय जनतंत्र और हिंदी साहित्य में ग्रामीण जीवन की समस्या	प्रा. पल्लवी एकनाथ चव्हाण	92
28	भारतीय जनतंत्र और हिंदी कहानियों का परिवेश	श्री .अविनाश दिलीप कांबळे	95
29	भारतीय जनतंत्र और स्वातंत्र्योत्तर साहित्यिक आंदोलन	प्रा.डॉ.व्यंकट अमृतराव खंदकुरे	98
30	भारतीय जनतंत्र और राजनीतिक पक्ष	श्रीमती.अश्विनी अशोक देशिंगे	101
31	जल प्रदूषण पर नियंत्रण समय की माँग (श्री प्रकाश की कथा' जल की चोरी' के परिप्रेक्ष्य में)	प्रा. डॉ. सुचिता संतोष भोसले	104
32	नागार्जुन के काव्य में जनचेतना	प्रा. डॉ. शहनाज महेमूदशा सय्यद	106
33	लोकतंत्र का उद्भव और विकास : तुलनात्मक अध्ययन	तब्बसुम शकील पठाण	109
34	भारतीय जनतंत्र का सार : संविधान उद्देशिका	श्री बाबुराव कृष्णा सारंग	110
35	भारतीय जनतंत्र और आज का युवक	श्रीमती. सविता मकासरे	113
36	हिंदी लघुकथा और भारतीय जनतंत्र	प्रो. डॉ. नाजिम शेख	114
37	भारतीय जनतंत्र और डॉ.ज़ाकिर अली 'रजनीश'की बाल कहानियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की झलकियाँ	मेघा संभाजी तोडकर	116

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / January 2025 / Special Issue 15 Volume V

09

लोकतंत्र को मजबूत बनाती प्रतिरोध की भावना

डॉ. आरिफ शौकत महात
हिंदी विभाग प्रमुख,
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त)

सारांश -जब कोई शासन दमनकारी नीतियों को अपनाता है। लोकतंत्र पर राजतंत्र हावी होने लगता है। मानवीय मूल्य एवं मानवीय आदर्श को दरकिनार किया जाता है, तब प्रतिरोध का साहित्य जन्म लेने लगता है। इस साहित्य के अंतर्गत कथा, कविता, नाटक, सिनेमा आदि सभी प्रकार क्रियाशील नजर आते हैं। हिंदी कवियों में मुक्तिबोध, नागार्जुन, निराला, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, धूमिल, पाश दूधनाथ सिंह आदि प्रमुख कवि प्रतिरोध का भाव व्यक्त करते नजर आते हैं। इन्होंने अपनी कविता उनके माध्यम से दमनकारी नीतियों के कारण आम आदमी की होने वाली अवहेलना, उनकी पीड़ा को वाणी देने का काम किया। अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से इन कवियों ने विरोध दर्शाया साथ ही जनता को जागृत करने के साथ अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए आमादा किया।

"सत्ताएँ अपनी सुरक्षा के लिए सुविधाजनक आख्यानों का विनिर्माण करती हैं। इनमें सच और झूठ का दिलफ़रेब घालमेल होता है। ये विनिर्मित आख्यान सत्ता के औचित्य और उसकी वैधता को स्थापित करते हैं। इन आख्यानों के जरिये किसी समाज की सामूहिक स्मृतियों को संशोधित, संपादित और पुनर्कल्पित किया जा सकता है।

इसलिए प्रतिरोध की कविता का एक काम स्मृति पर पुनराधिकार क़ायम करना, रिक्लेम करना, भी है। निजी और सामाजिक जीवन की उन जरूरी स्मृतियों को जीवित रखना, जिन्हें सत्ताधारी आख्यानों के जरिये धूमिल किया जाता है। पुनराधिकृत स्मृतियाँ प्रतिरोध की कविता में एक अव्यवस्थित कोलाज की तरह आएँ, यह स्वाभाविक है। उन्हें इतना व्यवस्थित नहीं होना चाहिए कि स्वयं एक आख्यान बन जाएँ।"

बीज शब्द- लोकतंत्र, प्रतिरोध, कविता, जनतंत्र, समकालीन।

आजादी की अमृत महोत्सव में पहुँचकर भारत दुनिया का सबसे सफल और मजबूत लोकतंत्र के रूप में जाना जाता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र आज भी अपनी विश्वसनीयता को बनाए रखना में सफल हुआ है इसके पीछे कहीं ना कहीं मजबूत संविधान की भूमिका अहम रही है। कोई भी देश और वह जिस तंत्र से चल रहा है वह पूरी तरह से कभी भी परिपूर्ण नहीं होता। उनमें कुछ ना कुछ खामियाँ, कमियाँ रह जाती हैं। वक्त की रहते इन खामियों और कर्मियों पर गौर करें तो वह देश एवं तंत्र और मजबूती से उभर कर सामने आ जाता है।

भारत देश कि लोकतंत्र की अपनी गरिमा है। भारत में लोकतंत्र की स्थिति को जानने से पहले लोकतंत्र को आसान भाषा से समझने का प्रयास करते हैं। लोकतंत्र सरकार का सबसे प्राचीन स्वरुप है। लोकतंत्र को अंग्रेजी में 'डेमोक्रेसी' कहा जाता है। यह 'डेमोस' (डेमोस- लोग) और 'क्रेटोस' (क्रेटोस- शक्ति) का अर्थ लोगों और शक्ति से बना है, इसलिए लोकतंत्र का अर्थ है लोगों का शासन। अब्राहम लिंकन ने लोकतंत्र को 'जनता की, जनता द्वारा, जनता के लिए सरकार' के रूप में परिभाषित किया। लोकतंत्र केवल सरकार का एक रूप नहीं है, यह जीवन का एक तरीका है।

वास्तविक रूप में लोकतंत्र को अपने मूल अस्तित्व में आने के लिए बड़ा संघर्ष करना पड़ा है। इसके शुरुआती दौर में यूनानी नगर-राज्य में सरकार के सभी निर्णय नगर के सभी नागरिकों की बैठक बुलाकर प्रत्यक्ष मतदान द्वारा लिए जाते थे, इसलिए वहाँ के लोकतंत्र को प्रत्यक्ष लोकतंत्र कहा जाता था। इसके उपरांत सन् 1215 के समय इंग्लैण्ड की जनता को राजा से नागरिक अधिकारों का चार्टर आदि प्राप्त हुआ। इसे मैग्ना चार्टा कहा जाता है। इसे ही आधुनिक लोकतंत्र का पहला चरण माना जाता है। कालांतर में अमेरिकी उपनिवेशों ने ब्रिटिश शासन व्यवस्था को उखाड़ फेक लोकतांत्रिक संविधान को अपनाया। फिर भी अगले 100 वर्षों तक लोकतंत्र के लिए लोगों को संघर्षरत रहना पड़ा। औद्योगिक विकास की क्रांति ने लोकतंत्र के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नई वैज्ञानिक खोजें हुईं, मशीनें बनाई गईं, बड़े कारखाने खोले गए और उनमें हजारों श्रमिकों को रोजगार मिला, उत्पादन में वृद्धि हुई, कृषि एक गौण व्यवसाय बन गया, जिससे मजदूर वर्ग में जागृति आयी। अपने अधिकारों का एहसास हुआ. जिन लोगों ने शिक्षा के गुण सीख लिए वे अपने अधिकारों के लिए लड़ने लगे। समय के साथ वे सफल हुए, मताधिकार का विस्तार हुआ और लोकतंत्र अस्तित्व में आया। लोकतंत्र के मूल्यों और आदर्शों को पूरे विश्व में स्वीकार किया गया। लोकतंत्र न केवल एक राजनीतिक व्यवस्था है बल्कि यह जीवन के प्रति एक दृष्टिकोण है। एक सच्चे लोकतंत्र के लिए व्यक्तियों के सभी जीवन और रिश्तों में लोकतांत्रिक मूल्यों की प्रभावी अभिव्यक्ति की आवश्यकता होती है।

न जाने कितनी पीढ़ियों के संघर्ष के बाद भारत में लोकतंत्र की स्थापना हुई है। और इस लोकतंत्र को बनाए रखने में बहुतों ने अपनी जान की आहुति दी है। साथ ही भारत के मजबूत संविधान में इस लोकतंत्र को आज भी बनाए रखने में अहम भूमिका निभाई है।

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / January 2025 / Special Issue 15 Volume V

भारत के संविधान को मूत रूप देने वाले शिल्पकार डॉ बाबासाहेब अंबेडकर एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था चाहते थे, जिसमें धर्म, जाति, रंग तथा लिंग आदि के आधार पर भेदभाव किए बगैर सभी को समान राजनीतिक अवसर प्रदान किया जाए। उनका विश्वास था कि बिना आर्थिक और सामाजिक विषमता दूर किए, वास्तविक जनतंत्र की स्थापना नहीं हो सकती है।

किसी भी लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए कुछ स्तंभ महत्वपूर्ण होते हैं, जिस पर लोकतंत्र का महल खड़ा रहता है। उनमें चुनाव आयोग, सक्षम विपक्ष, न्यायपालिका, मीडिया इत्यादि महत्वपूर्ण माने जाते हैं। इन स्तंभों की स्वायत्तता इसकी अहम भूमिका में रहती है जिसके चलते यह अपना काम निपक्षता से करते हुए सही गलत का मूल्यांकन कर जनता के सम्मुख देश की वास्तविक स्थिति को रखते हैं। जब तक लोकतंत्र में इन स्तंभों की स्वायत्तता बरकरार है तब तक लोकतंत्र का महल जगमगाता रहता है।

जब चूनी हुई सरकार के द्वारा लोकतंत्र के इन स्तंभों की स्वायत्तता छीन ली जाती है। या यूँ कहे जब लोकतंत्र में लोगों द्वारा चुनी गई सरकार के अंदर राजसी प्रवृत्ति पनपने लगती है। तब उसके खिलाफ किया गया कोई भी कार्य या विरोध प्रदर्शन उसे बगावत लगने लगता है। और उस बगावत को कुचलने का वह हर संभव प्रयास करता है। इसी कारण वह कभी अपने खिलाफ होने वाले विरोध का चर्चा के माध्यम से जवाब देने के पक्ष में नहीं रहता। उसे लगता है उसकी सत्ता के खिलाफ यह आवाज है और इस आवाज को वक्त के रहते कुचल देना चाहिए। प्रतिरोध का भाव इसी के खिलाफ खड़ा होता है।

लोकतंत्र की होती दुर्गति एवं आज आम आदमी की होने वाली घुटन को समकालीन कवियों ने खुले तौर पर व्यक्त किया। लोकतंत्र में व्यवस्था के नाम पर सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार, दमन, शोषण आदि का बोलबाला आम आदमी के जीवन को नर्क बना चुका है। लोकतंत्र का चोला पहने राजतंत्र की इसी व्यवस्था के प्रति विरोध प्रतिरोध की कविता का मूल स्वर रहा है।

जब कोई शासन दमनकारी नीतियों को अपनाता है। लोकतंत्र पर राजतंत्र हावी होने लगता है। मानवीय मूल्य एवं मानवीय आदर्श को दरकिनार किया जाता है, तब प्रतिरोध का साहित्य जन्म लेने लगता है। इस साहित्य के अंतर्गत कथा, कविता, नाटक, सिनेमा आदि सभी प्रकार क्रियाशील नजर आते हैं। हिंदी कवियों में मुक्तिबोध, नागार्जुन, निराला, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, धूमिल, पाश दूधनाथ सिंह आदि प्रमुख कवि प्रतिरोध का भाव व्यक्त करते नजर आते हैं। इन्होंने अपनी कविता उनके माध्यम से दमनकारी नीतियों के कारण आम आदमी की होने वाली अवहेलना, उनकी पीड़ा को वाणी देने का काम किया। अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से इन कवियों ने विरोध दर्शाया साथ ही जनता को जागृत करने के साथ अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए आमादा किया।

"सत्ताएँ अपनी सुरक्षा के लिए सुविधाजनक आख्यानों का विनिर्माण करती हैं। इनमें सच और झूठ का दिलफ़रेब घालमेल होता है। ये विनिर्मित आख्यान सत्ता के औचित्य और उसकी वैधता को स्थापित करते हैं। इन आख्यानों के जरिये किसी समाज की सामूहिक स्मृतियों को संशोधित, संपादित और पुनर्कल्पित किया जा सकता है।

इसलिए प्रतिरोध की कविता का एक काम स्मृति पर पुनराधिकार क़ायम करना, रिक्लेम करना, भी है। निजी और सामाजिक जीवन की उन जरूरी स्मृतियों को जीवित रखना, जिन्हें सत्ताधारी आख्यानों के जरिये धूमिल किया जाता है। पुनराधिकृत स्मृतियाँ प्रतिरोध की कविता में एक अव्यवस्थित कोलाज की तरह आएँ, यह स्वाभाविक है। उन्हें इतना व्यवस्थित नहीं होना चाहिए कि स्वयं एक आख्यान बन जाएँ" [1]

हिंदी साहित्य में प्रतिरोध का स्वर वक्त दर वक्त उठते रहा है। 1960 के बाद प्रतिरोध का यह स्वर मुखर रूप में उद्घाटित होते हुए नजर आता है। लोकतंत्र अपने वास्तविक अर्थ को भूल चुका था। देश में आम आदमी की हितों की चर्चा न होकर खास गिने चुने लोगों तक लोकतंत्र का समूचा तंत्र कार्यरत होता नजर आता है। इस परिस्थितियों को तत्कालीन कवियों ने बेबाकी से स्पष्ट किया। निरंजन क्षेत्रिय अपनी प्रजातंत्र कविता में कहते हैं-

"प्रजातंत्र माने वह नहीं
जो सदियों से हमें रटाया जा रहा है
अर्थ बदल गये हैं अब
'प्र' माने प्रजा
'जा' माने जान लेवा
'तं' माने तंत्र नहीं कुछ
'त्र' माने त्राहि-त्राहि।" [2]

इसे और बेहतर तरीके से स्पष्ट करते हुए धूमिल कहते हैं आज का लोकतंत्र आदमी के खिलाफ चल रहा षड्यंत्र के अलावा कुछ नहीं जिसमें लोकतंत्र का भुलावा देकर हर रोज आम आदमी की हत्या की जा रही।

"न कोई प्रजा है
न कोई तंत्र है

यह आदमी के खिलाफ
आदमी का खुला-सा
षड्यंत्र है।" [3]

जब सत्ता, सत्ता के घमंड में चूर होती है तब धीरे-धीरे जनतंत्र की हत्या का खेल शुरू हो जाता है। जनतंत्र की हत्या का यह खेल इस तरह जारी रहता है कि जिसमें जणतंत्र की आत्मा मारी जाती है केवल शरीर बाकी रहता है। बिल्कुल उस बिजूका की तरह जो खेत में खड़ा रहता है। जो कहने भर के लिए खड़ा है लेकिन असल में उसमें कोई जान नहीं है।

जनतंत्र
जिसकी रोज सैकड़ो बार हत्या होती है
और हर बार
वह भेड़ियो की जुबान पर जिंदा है।[4]

जब इस तरह की व्यवस्था देशभर में लागू होने लगती है तब प्रतिरोध की कविता जन्म लेती है। जो लोकतंत्र को राजतंत्र में बदलने वाली निरंकुश सत्ता पर अंकुश लगाने के लिए प्रतिबद्ध नजर आती है। जो आम आदमी की बात करती है साथ ही आम आदमी को सचेत करने की ईमानदार कोशिशें में लगी रहती है। ये कवि कहने से नहीं डरते कि उनकी कविता अकेले को सामूहिकता देती है और समूह को साहस से परिपूर्ण बनती है। ये कवि अपनी कविता को जनता का प्रतिनिधि समझते हैं। इनका लेखन जनता के पक्ष में होता है। इस संदर्भ में धूमिल कहते हैं-"कविता / शब्दों की अदालत में / मुजरिम के कटघरे में खड़े बेकसूर आदमी का हलफनामा है।[5]

प्रतिरोध की कविता वर्तमान घटनाओं परिस्थितियों या मुद्दों से जुड़ी समस्याओं को उभरते या उन पर प्रकाश डालने का काम वास्तविक रूप में करती है। शासन रूपी भेड़िया हर जगह है और वह गुर्राता रहता है और उसकी गुर्राहट से डर कर भागने की अपेक्षा मशाल जलाने की आकश्यक्ता है- "भेड़िया गुर्राता है / तुम मशाल जलाओ / उसमें और तुममें /यही बुनियादी फर्क है.... / भेड़िया मशाल नहीं जला सकता।" [6]

प्रतिरोध के कवियों का मानना है की भेड़िये का आना जरूरी है क्योंकि यह भेड़िया जब तक नहीं आएगा तब तक हम खुद को पहचानेगें नहीं। तब तक हमें अपनी ताकत का एहसास नहीं होगा। और निर्भर होकर मशाल उठाना हम नहीं सीख पाएँगे।

जनमत का आधार लेकर प्रस्तावित सत्ता जब मनमाना कार्य करने लगती है जब प्रतिरोध होता है। तो वह कहते हैं जनमत हमारे साथ है। वास्तविक रूप में लोकतांत्रिक देश में जनमत का महत्व है। लेकिन जनमत का नाम लेकर जब सत्ता निरंकुश बनने लगती है तभी प्रतिरोध का भाव सक्रिय होता है और वह सत्ता के विपक्ष में खड़ा होता है। वास्तविक रूप में सत्य के अनुयाई या प्रतिरोध के साहित्यकारों को हमेशा सत्ता के विपक्ष में खड़ा होना चाहिए ताकि उस पर कुछ हद तक अंकुश लगाया जा सके। यही लोकतंत्र की खूबसूरती है। जनमत पर सार्थक बहस करते हुए कुबेरनाथ राय अपने निबंध में लिखते हैं-

"प्राचीनकाल में राजा 'ईश्वर' का प्रतिनिधि माना जाता था। ठीक उसी शैली में, उसी सीमा तक और उसी अर्थ में कुछ लोग या कुछ दल अपने को 'जन-प्रतिनिधि' बना लेते हैं। आधुनिक दल-तांत्रिक व्यवस्था को कुछ रूप ही ऐसा है। 'जनमत' नाम की कोई चीज होती नहीं, बल्कि वह कुछ लोगों द्वारा अपने विचारों की आकृति में प्रयत्नपूर्वक बनाई जाती है। सर्वथा नहीं तो कम-से-कम सौ में नब्बे मुद्दों पर यही होता है। जैसे 'ईश्वर' शब्द के साथ पर्याप्त व्यभिचार और स्वार्थ-मृगया हो चुका है, वैसे ही 'जन' शब्द के साथ भी। उसके जरा भी कम नहीं। ऐसी हालत हो चुका है, वैसे नहीं माना जा सकता कि जनमत जो कहेगा, वही सर्वदा सत्य होगा या 'जनमत', 'बहुमत' या 'जनता' की राय सदा 'सत्य' ही होगी। ऐसी हालत में गांधीवादी साहित्यकार के लिए जरूरी हो जाता है 'जनमत' के विरुद्ध विद्रोह ! "एकला चलो रे।" सत्य के लिए अभिमन्यु की तरह अकेले खड़े हो जाना। भग्न चक्र की छाया में।" [7] वास्तविक रूप में प्रतिरोध के कवियों की यही भूमिका होती है।

लोकतांत्रिक इस देश में सत्ता जब निरंकुश बनती है तो वह तानाशाही प्रवृत्ति से युक्त नजर आती है। जिस जनमत के आधार पर वह सत्ता में बैठे हैं उसी जनता को भूल जाते हैं। सरकार नीतियाँ बनती है लेकिन उसका फायदा गिने चुने लोगों को ही मिलता है और सरकार द्वारा विकास के नाम पर खर्च किया जाने वाला पैसा चुनिंदा लोगों की तिजोरी ही भरता है। और सरकारी तिजोरियों को भरने के लिए आम आदमी को निचोड़ लिया जाता है जो पहले से ही खस्ता हालत में है। लीलाधर जगूड़ी अपनी कविता 'इस व्यवस्था में' इस पर भाष्य करते हैं- "इस देश की हर सड़क तिजोरी तक जाती है /और तुम्हारे लिए पोस्टकार्ड की कीमत बढ़ जाती है।" [8]

जब सत्ता निरंकुश होती है तो गिने चुने साहित्यकार एवं कलाकार अपनी कला के माध्यम से प्रतिरोध की भूमिका में नजर आते हैं। प्रतिरोध करना किसी भी व्यवस्था का विरोध नहीं है बल्कि उस व्यवस्था में पनपने वाली कमियों को दर्शाना है जो आम आदमियों के जीवन को आहत करती है। इस कार्य के लिए बड़ी हिम्मत लगती है और खतरों को भी उठाना पड़ता है। इसी कारण मुक्तिबोध अपनी 'अंधेरे में' कविता में कहते हैं-"अब अभिव्यक्ति के सारे ख़तरे/ उठाने ही होंगे। / तोड़ने होंगे ही मठ और गढ़ सब। / पहुँचना होगा दुर्गम

पहाड़ों के उस पार / तब कहीं देखने मिलेंगी बाँहें / जिसमें कि प्रतिपल काँपता रहता / अरुण कमल एक / ले जाने उसको धँसना ही होगा" [9]

लोकतंत्र में कभी कभी सत्ता को अपने खिलाफ कहीं गई बात पसंद नहीं आती। (लोकतंत्र में हर दौर की सत्ता में यह बात देखी जा सकती है।) इसलिए अपने खिलाफ उठने वाली हर आवाज को वह खुद या अपने अनुयाई द्वारा दबाने का भरकश प्रयास करता है। इसीलिए कभी-कभी प्रतिरोध करने वाले साहित्यकारों को खतरे उठाने पड़ते हैं अपनी भूमिका रखने के लिए वक्त के शासन द्वारा तत्कालीन साहित्यकारों पर खतरे मंडराते रहे हैं। वर्तमान दौर में गुजराती कवित्री पारुल खक्खर अपनी कविता शववाहिनी गंगा मैं तत्कालीन सरकार पर कटाक्ष किया। और यह कथा कटाक्ष सारे देश भर में स्थानीय भाषाओं में अनुवाद होकर वायरल हो गया। इस पर प्रतिक्रिया के रूप में उन्हें गालियाँ देकर खूब ट्रोल किया गया।

"गालियों की खोज में सबसे अधिक रचनाशीलता दिखलाई गुजराती साहित्य अकादमी ने, जिसके अध्यक्ष विष्णु पांड्या ने अकादमी की पत्रिका 'शब्दश्रुति' के पेज 89 पर बिना अपना नाम दिए एक आकस्मिक संपादकीय लिखकर कवयित्री पर 'राष्ट्र-विरोधी साहित्यिक नक्सल' होने का आरोप लगाया। बाद में गुजरात के लगभग 200 लेखकों-कलाकारों ने इस संपादकीय की निंदा करते हुए संयुक्त बयान जारी किया।" [10]

अतः कभी-कभी सत्ता पक्ष की ओर से प्रतिरोध के भाव को कुचलने के लिए भय का माहौल तैयार किया जाता है और प्रतिरोध करने वाले को राष्ट्र विरोधी करार देकर उसके खिलाफ माहौल तैयार किया जाता है।

निष्कर्षतः कह सकते हैं लोकतंत्र में समूचा तंत्र आम आदमी की इर्द-गिर्द एवं उसके बेहतरी के लिए कार्य करता है। लेकिन जब यही जनमत का सहारा लेकर बनाई गई सरकार सत्ता के अहम में जनतंत्र को कुचलने का काम करती है तब उसके विरोध में प्रतिरोध का भाव जागृत होता है। प्रतिरोध का यह भाव निरंकुश होती सत्ता पर अंकुश लगाने का काम करता है। इसका कतई यह अर्थ नहीं है कि जनमत के द्वारा बनाई गई सरकार को यह खारिज करना चाहता है। इसका उद्देश्य बस इतना ही है की सत्ता पक्ष आम आदमी से जुड़े हुए प्रश्नों को तरज़ीह देते हुए उनकी समस्याओं का समाधान करें और लोकतंत्र की मूल्य को निभाते हुए लोकतंत्र की गरिमा को बढ़ाएँ।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. कुमार आशुतोष, राष्ट्रीय शांति पर्व और प्रतिरोध की कविता, संपादकीय- आलोंचना पत्रिका, अप्रैल-जून 2021, पृ क्र x
2. क्षेत्रिय निरंजन, अपने विरोध में(प्रजातंत्र), पृ क्र 55
3. धूमिल, सुदामा पांडे का प्रजातंत्र पृष्ठ क्रमांक 18
4. धूमिल, संसद से सड़क तक, शहर में सूर्यास्त पृष्ठ क्रमांक 48
5. धूमिल, संसद से सड़क तक, पृष्ठ क्रमांक 7
6. सक्सेना सर्वेश्वर दयाल प्रतिनिधि कविताएँ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली पृ क्रमांक 88
7. राय कुबेरनाथ, सच बोलना ही कविता है, https://poshampa.org/sach-bolna-hi-kavita-hai-kubernath-rai/
8. जगूड़ी लीलाधर, नाटक जारी है, 'इस व्यवस्था में' पृ क्र 44
9. मुक्तिबोध, अंधेरे में, कविताकोश गूगल
10. कुमार आशुतोष, राष्ट्रीय शांति पर्व और प्रतिरोध की कविता, संपादकीय- आलोंचना पत्रिका, अप्रैल-जून 2021, पृ क्र x